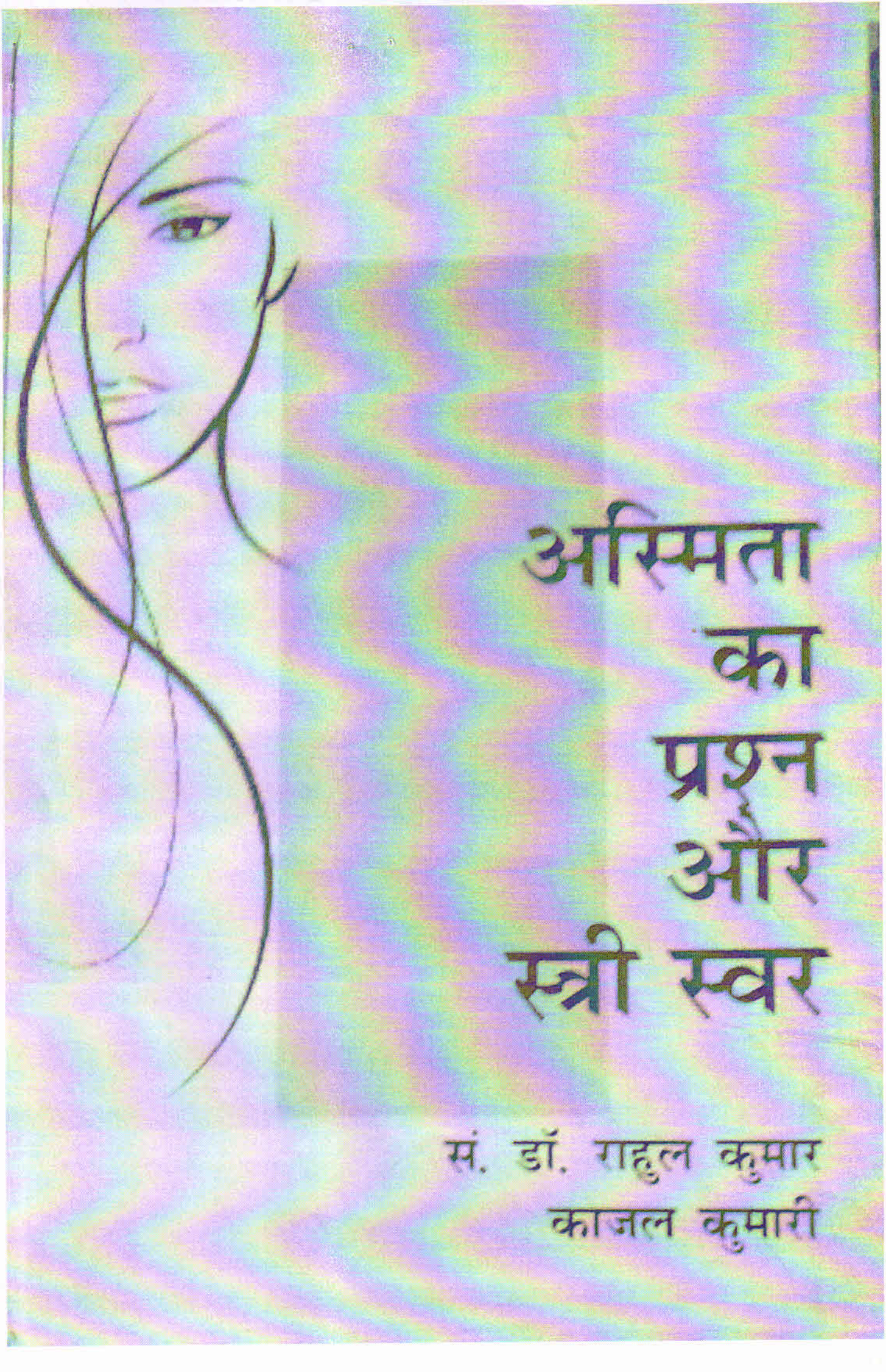

अस्मिता का प्रश्न और स्त्री स्वर

सं. डॉ. राहुल कुमार
काजल कुमारी

नमिता सिंह की कहानियों में स्त्री अस्मिता : संकट और समाधान 145
—राकेश दत्त शुक्ला

भीष्म साहनी के नाटकों में स्त्री अस्मिता 149
—बबलू कुमार दास

हिंदी उपन्यास में चित्रित काम-काजी महिला की स्थिति 152
—अनामिका भारती

भारतवर्ष की भूली बिसरी वीरांगनाएँ 156
—डॉ. कामना राय

भारत में सूक्ष्म वित्त के माध्यम से महिला सशक्तिकरण 160
—प्रो. संगीता बारला

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे स्त्री सहभागिता के स्वर 166
—प्रो. डॉ. जी. रेणुका

भारत में महिला शिक्षा 172
—राहुल/रविकांत यादव

महिला सशक्तीकरण की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 177
—साकेत कुमार पाठक

भारतीय समाज में लैंगिक भेदभाव तथा महिला विकास 181
—डॉ. बटुकनाथ

महिला सशक्तिकरण के संवैधानिक स्वर 190
—युगल रजक

स्त्रियों के संदर्भ में संवैधानिक कानून 197
—सरिता कुमारी

परिकल्पना
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
मो. 9968084132, 7982062594
e-mail : parikalpana.delhi2016@gmail.com

ISBN 978-93-95104-01-2

ISBN : 978-93-82605-99-8

© : सम्पादक

मूल्य : आठ सौ रुपये

प्रथम संस्करण : 2019

प्रकाशक : विकास प्रकाशन
2226/बी, प्रथम तल, गली नं. 33,
[illegible] पुस्ता, सोनिया विहार,
दिल्ली-110090
मोबाइल : 9211559886

आवरण : [illegible]

शब्द-संयोजन : कुणाल कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विकास ऑफसेट प्रिंटर्स
[illegible] विहार, दिल्ली-110093

Jharkhand Ka Hindi Sahitya
Edited by [illegible]

Price 800.00

अनुक्रम

1. गम्भीर रहिए, विद्वान् कहलाइए
अशोक प्रियदर्शी 1-4

2. साहित्य की विविध विधाओं में झारखण्डी कलम
विद्याभूषण 5-9

3. आदिवासियों की जनतांत्रिक मुद्दों, समस्याओं को समझता साहित्य
महादेव टोप्पो 10-20

4. हिन्दी कविता के समाज में झारखण्ड की उपस्थिति
अशोक सिंह 21-27

5. ज्ञानेन्द्रपति की कविताओं में झारखण्ड की उपस्थिति
डॉ. विभा शंकर 28-36

6. छोटानागपुर की आधुनिक हिन्दी कविता : स्थिति-परिस्थिति
डॉ. सुनील कुमार दुबे 37-41

7. प्रकृति, जल, जंगल, जमीन के बीच जीवन के प्रश्न और
झारखण्ड केंद्रित हिन्दी कविता
डॉ. प्रज्ञा गुप्ता 42-48

8. झारखंड के कथेतर रचनाकार
श्रीमती विजय शर्मा 49-54

9. झारखण्ड का जनजीवन भाषा एवं कथा-साहित्य
राकेश कुमार सिंह 55-61

10. झारखण्ड की हिन्दी कहानी : एक प्रस्तावना
बसंत कुमार गुप्ता 62-65

11. झारखंड में जनजातीय उपन्यासों के सौ साल
अनामिका प्रिया 66-69

12. सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, भाषाई अस्मिता और आदिवासी विमर्श
प्रभाकर सिंह 70-77